 ISSN 2581-9917

ग्राम-स्वराज्य की अवधारणा और महात्मा गाँधी के विचार

सत्यम भारती*

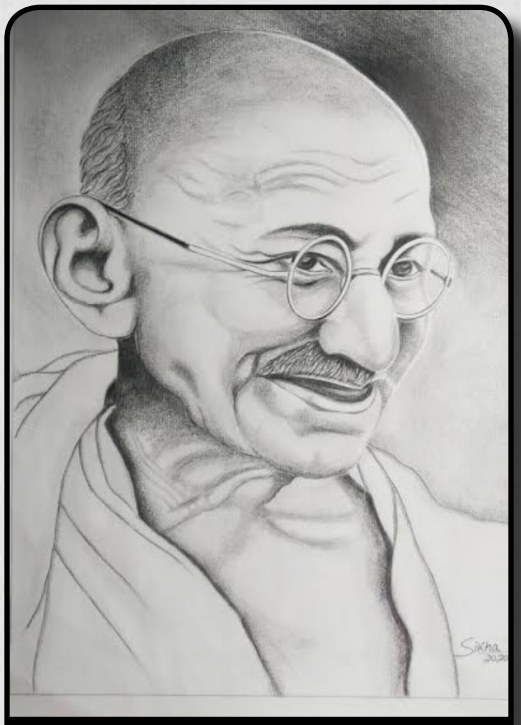

Illustration by Vishwajit Yadav

शोध-सार

वैश्वीकरण के इस दौर में गाँव से विलुप्त होते लोकतत्त्वों और ग्राम्यतत्त्वों की खोज करना और महात्मा गाँधी के दिये गये सिद्धांतों की प्रासंगिकता की पड़ताल करना, मेरे इस शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य है। भारत की आधी आबादी गाँव में निवास करती है,ऐसे में उनका विकास किये बिना देश का सर्वांगीण विकास असंभव है। ग्राम्य-स्वराज्य, सर्वोदय, ट्रस्टीशिप, राजभाषा हिंदी के प्रति सम्मान, स्वच्छता, मद्यनिषेध आदि गांधीजी के विचार देश के आंतरिक और बाह्य विकास के लिए किस प्रकार आवश्यक है, वो इस शोध-आलेख में प्रस्तुत किया गया है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव और संचार के साधनों की अतिशय वृद्धि होने के कारण अब गाँव, ग्लोबल-गाँव बनता जा रहा है, ऐसे में अपनी सभ्यता, संस्कृति और परंपरा को बचाना अति आवश्यक हो गया है। अगर गांधीजी के विचार और सिद्धांत को सही तरीके से अमल में लाया जाय तो इस समस्या से हमें मुक्ति मिल सकती है। महात्मा गाँधी जी के विचार आज के जीवन के लिए किस तरह से प्रासंगिक हैं, उसकी क्या उपयोगिता है? इन सब की पड़ताल करना मेरे इस शोध आलेख का मुख्य निकष है।

बीज-शब्द

ग्राम्य-स्वाराज्य, सर्वोदय, ट्रस्टीशिप, ग्लोबल-गांव, स्वराज, आत्मनिर्भर, स्वच्छता, आत्मसंयम, इंद्रिय-निग्रह, प्रार्थना, संगीत, राजभाषा, लोकभाषा, लोकतन्त्र, वैश्वीकरण, कुटीर उद्योग, आदर्श गाँव, स्वशासन, आत्मसंयम, व्यक्ति की स्वतंत्रता, नैतिक, इंद्रिय निग्रह, मन की पवित्रता आदि।

शोध-आलेख

'स्वराज' शब्द 'स्व' और 'राज' से मिलकर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है-स्वशासन या अपना राज्य। वैसा राज्य जहाँ जनता का स्वामित्व हो, उस राज्य के सारे क्रियाकलाप पर आंशिक और प्रत्यक्ष रूप से जनता का अधिकार हो। स्वराज का संबंध गांधीजी स्वशासन, आत्मसंयम तथा व्यक्ति की स्वतंत्रता से जोड़ते हैं। अंग्रेजी हुकूमत से मुक्ति दिलाना स्वराज का मुख्य लक्ष्य था। स्वराज को बढ़ावा देने के लिए वे जनता को स्वावलंबी, स्वदेशी वस्तु अपनाने तथा आत्मनिर्भर बनने की सलाह देते हैं। 'स्वराज' शब्द का प्रथम प्रयोग स्वामी दयानंद सरस्वती करते हैं, आगे इसका प्रयोग बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी करते हैं।

* शोधछात्र, हिन्दी विभाग
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

'ग्राम स्वराज' से तात्पर्य गाँव में खुद की शासन व्यवस्था लागू करने से है। गाँव को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने से है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय 'स्वराज' शब्द काफी प्रचलित था, गांधीजी भी इसका प्रथम प्रयोग स्वतंत्रता आंदोलन के लिए चलाये जाने वाले आंदोलनों के लिए ही करते हैं। गांधीजी का मानना था कि अगर देश का विकास करना है तो गाँव का पहले विकास करना होगा। हम देश की आधी से ज्यादा आबादी को जागृत किए बिना आजादी की कल्पना नहीं कर सकते हैं। कवि सुमित्रानंदन पंत 'भारतमाता' कविता में गाँव की दीन-हीन स्थिति, गरीबी, जहालत आदि का सजीव वर्णन प्रस्तुत करते हैं -

भारत माता
ग्रामवासिनी। ...
तीस कोटि संतान नग्न तन
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन नतमस्तक
तरु-तल निवासिनी।

महात्मा गांधी का मानना था कि अगर गाँव नष्ट हो जाए तो हिंदुस्तान नष्ट हो जाएगा। हम गाँव की सेवा करने से ही सच्चे स्वराज की स्थापना कर पायेंगे। गाँव उतने ही पुराने हैं, जितना कि भारत है, भारत की सच्ची आत्मा गाँव में निवास करती है। इनके ग्राम स्वराज का अर्थ-आत्मबल से परिपूर्ण होना है,आत्म निर्भरता से है,स्वयं के उपभोग के लिए स्वयं के उत्पादन से है। शिक्षा और आर्थिक संपन्नता को भी इसमें शामिल किया गया है। वे गाँव की सत्ता ग्रामीणों के हाथ में सौंपना चाहते थे। गांधी जी जिस ग्राम स्वराज का स्वप्न देखते हैं, उसके केंद्र में-स्वयं की सत्ता, स्वावलम्बी, अर्थ एवं प्रबंधन सत्ता, स्वच्छता, हृदय की शुद्धता,स्वतंत्रता आदि है। वे लिखते हैं- ''मेरा स्वराज भारत के लिए संसदीय शासन की मांग है, जो वयस्क मताधिकार पर आधारित होगा।'' अर्थात् जनप्रतिनिधियों द्वारा संचालित ऐसी व्यवस्था जो जन आवश्यकताओं तथा जन आकांक्षाओं के अनुरूप हों।

गांधीजी अपने आंदोलनों में किसानों, महिलाओं, अछूतों एवं ग्रामीणों को शामिल करते हैं, जो वर्षो से समाज में उपेक्षित रहे हैं। गांधी जी देश की प्रगति के लिए महिलाओं की सक्रियता जरूरी मानते हैं, क्योंकि अगर आधी आबादी जब निरक्षर, हाशिये पर और मुख्यधारा से दूर रहेगी तब तक ग्राम स्वराज एवं देश की स्वतंत्रता का सपना देखना व्यर्थ है। इसके लिए वे सत्याग्रह का सहारा लेते हैं। अन्याय, शोषण, उत्पीड़न और शोषणतंत्रों के खिलाफ अपने आत्मबल का अहिंसात्मक प्रयोग करना सत्याग्रह है। बाहरी ताकत, सामाजिक रूढ़ियों और सामंती मानसिकता से मुक्ति दिलाने के लिए गांधीजी सत्याग्रह का प्रयोग करते हैं। असहाय, गरीब, दिव्यांग, दलित, स्त्री आदि जो समाज में उपेक्षित समझे जाते थे, उनके उत्थान के लिए स्थापित आश्रम इस बात का प्रमाण है। वे लिखते हैं- ''जब तक हम अपने यहाँ की स्त्रियों को माँ, बहन, बेटी, समझकर उनका आदर करना नहीं सीखेंगे, तब तक भारत का उद्धार नहीं होगा''।

गांधीजी ग्रामवासियों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे, शिक्षा को बढ़ावा देना चाहते थे, समाज से जातपात मिटा कर हर तबके के लोगों को मुख्यधारा में लाना चाहते थे। वे ग्रामीणों में स्व-चेतना के विकास के लिए नाटकशाला एवं सभाशाला भी खोलते हैं और मनुष्यों में स्व की चेतना जागृत करते हैं। 'हिंद-स्वराज' की कल्पना 'ग्राम-स्वराज' का पर्याय बन जाता है। वे लिखते हैं- ''ग्राम स्वराज की मेरी कल्पना यह है कि वह एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा जो अपनी अहम जरूरतों के लिए अपने पड़ोसी पर निर्भर नहीं करेगा... वह परस्पर सहयोग से काम लेगा... हर गाँव में अपनी एक नाटकशाला, पाठशाला और सभाभवन रहेगा। बुनियादी तालीम के आखिरी दर्जे तक शिक्षा सबके लिए लाजमी होगी। जातपात और क्रमागत अस्पृश्यता के जैसे भेद आज हमारे समाज में पाए जाते हैं वैसे इस ग्राम समाज में बिल्कुल नहीं होंगे''।

गांधीजी की दृष्टि से ग्राम स्वराज में आर्थिक व्यवस्था ही आदर्श नहीं, अपितु सामाजिक व्यवस्था का भी महत्त्व है। इसलिए वे सभी सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास करते हैं। वे बताते हैं कि जब तक मनुष्य की सोच, चरित्र एवं कर्म शुद्ध नहीं हो जाए तब तक उसका सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। वह मद्यपान निषेध पर जोर देते हैं तथा समाज से जातिवाद, छुआछूत आदि को खत्म करना चाहते हैं। वे लिखते हैं- ''यह बड़े दुःख की बात है कि आज हमारे लिए धर्म का मतलब खानपान पर रोक-टोक तथा

ऊंच-नीच के भेद के सिवा कुछ नहीं रह गया है, जन्म से ही और धर्म से कोई छोटा या बड़ा नहीं होता। एकमात्र चरित्र ही इसकी कसौटी है। ईश्वर ने मनुष्य को बड़ा या छोटा नहीं बनाया है। कोई धर्म ग्रंथ जो किसी मनुष्य को उसके जन्म के कारण हीन अथवा छुआछूत करार देता है, हमारी श्रद्धा का पात्र नहीं हो सकता''।

गांधीवादी आदर्श सिर्फ कोरे आदर्श पर नहीं बल्कि यथार्थ और व्यावहारिक धरातल पर टिका हुआ है। सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, ग्राम- स्वराज्य, स्वदेशी, ट्रस्टीशिप आदि गांधीवादी विचारधारा के प्रमुख स्रोत हैं। गांधीवाद में विस्तृत एवं व्यवस्थित अध्ययन नहीं मिलता है बल्कि स्वानुभूति की प्रधानता है, यही कारण है कि यह जनता के लिए खुला स्पेस प्रदान करता है। गांधीवाद आत्मसंयम और इंद्रिय-निग्रह पर जोर देता है। वह लोगों को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने की बात करता है, जिसके केंद्र में मानवीय प्रेम और हृदय की शुद्धता शामिल है। वे लिखते हैं- ''हमें साध्य के साथ-साथ साधन की पवित्रता का भी ध्यान रखना चाहिये।''

गांधीजी गाँव में बेरोजगारी की समस्या का समाधान करने के लिए लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने की बात करते हैं। गांधीजी चरखा, करघा, आत्मनिर्भरता, अन्य ग्रामीण तथा कुटीर उद्योगों का समर्थन करते हैं तथा विदेशी हुकूमत की औद्योगिक नीति का विरोध करते हैं। इसके पीछे बेरोजगारी की समस्या का समाधान करना, मानव श्रम शक्ति को प्रोत्साहित करना एवं मानवीय मूल्यों से युक्त जीवन दर्शन निहित था। वे लिखते हैं- ''मैं यंत्रों का विरोधी नहीं, मैं तो उनके पागलपन का विरोधी हूँ। मानव के लिए उस यंत्र का क्या काम जिससे हजार-हजार व्यक्ति बेकार होकर,भूख से सड़कों पर मारे-मारे फिरें''। वर्तमान दौर में यह पंक्ति प्रसांगिक है, हमें इस समस्या का जल्द कोई ठोस समाधान ढूंढने की सख्त जरूरत है।

महात्मा गांधी 'आदर्श गाँव' का निर्माण करना चाहते हैं। उनका कहना था कि गाँव में साफ-सफाई का उत्तम प्रबंध हो, घर ऐसा हो जिसमें पर्याप्त हवा एवं रोशनी आ सके, घरों में इतनी जगह हो कि सब्जी उगाई जा सके, पशुओं को रखा जा सके। धार्मिक रीति-रिवाज निभाने के लिए सामूहिक बैठकशाला हो। इसके अलावा को-ऑपरेटिव डेयरी,प्राइमरी सेकेंडरी स्कूल हो जहाँ औद्योगिक पढ़ाई पर ध्यान दिया जाए। वर्तमान में गाँव का निर्माण इसी आधार पर किया जा रहा है। सभी का कल्याण एवं बहुजनों के हित के लिए गांधीजी ने सर्वोदय के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। यह सिद्धांत ऐसी नीति का समर्थन करता है, जिसका उदय जातपात, धर्म, संप्रदाय, स्त्री-पुरुष आदि के भेदभाव को मिटाकर समाज के सभी स्तरों पर कल्याण कार्य को बढ़ावा देना है।

'सर्वोदय' गांधीजी का एक सामाजिक आदर्श था। वे ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जहाँ सभी जाति के लोग आपस में सौहार्दपूर्ण तरीके से रहें और सब की उन्नति हो सके। सर्वोदय का विचार गांधीजी रस्किन की पुस्तक 'अनटू दिस लास्ट' पुस्तक से ग्रहण करते हैं। इंद्रिय निग्रह, नये समाज का निर्माण, सबकी उन्नति, विकेंद्रीकृत सत्ता, आर्थिक समानता, साधनों की पवित्रता, भूदान आदि सर्वोदय सिद्धांत की प्रमुख विशेषताएँ हैं। उनके इस विचार को बिनोवा भावे, जयप्रकाश नारायण और मार्टिन लूथर आगे बढ़ाते हैं। गांधी जी का कहना था कि पंचायती राज्य एक सच्चे लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करता है। वे मानते थे कि ग्राम स्वराज से लोगों के सशक्तिकरण और लोकतंत्र में उनकी भागीदारी का इजाफा होगा, गाँव का समाज वर्गविहीन, स्वशासित होगा। प्रत्येक ग्राम समुदाय का प्रशासन पांच व्यक्तियों की पंचायत चलाएगी जो ग्राम-वासियों द्वारा संचालित होगा। ग्राम-पंचायत को विधायक कार्यकारी तथा न्यायिक शक्तियाँ प्राप्त होंगी। सत्ता का विकेंद्रीकरण होगा, प्रत्येक गांव स्वयं-सेवी रूप से संघ से संबंधित होगा। गांधी जी इसे वास्तविक स्वराज कहते हैं। व्यक्ति को पूर्ण क्षमता प्राप्त होगी। गांधीजी लिखते हैं- ''सच्चा लोकतंत्र केंद्र में बैठकर राज्य चलाने वाला नहीं होता, अपितु यह तो गांव के प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग से चलता है''। संविधान निर्माताओं ने आजादी के पश्चात् अनुच्छेद-340 में गांधी के ग्राम स्वराज संबंधित अवधारणा और मत को शामिल किया है। आजादी के बाद बलवंत राय मेहता समिति (सन 1957 में) की सिफारिश पर भारत में पंचायती राज व्यवस्था लागू की गयी जिसमें गांव में त्रिस्तरीय शासन व्यवस्था लागू की गयी, जिसका स्वप्न कभी गांधी जी ने देखा था।

'ट्रस्टीशिप' समाज में आर्थिक समानता लाने के लिए प्रतिपादित सिद्धांत था। जिसमें वे अमीर लोग से गरीबों की सहायता और असहाय लोगों की देखभाल और सेवा करने की अपील करते हैं। गांधीजी लिखते हैं- ''प्रत्येक व्यक्ति से अनुरोध है कि वह अपने आप को संपत्ति का स्वामी न समझ कर, उसका न्यासी (ट्रस्टी) समझे और संपत्ति का उपभोग सार्वजनिक हित में करे''। एक

बात स्पष्ट रूप से कही जा सकती है कि समाज में आर्थिक समानता लाना, भेदभाव मिटाना, गरीबी को दूर करना तथा करुणा, दया, सेवा, प्रेम आदि को बढ़ावा देना गांधीवादी मूल्य का मुख्य उद्देश्य है।

गांधीजी गाँव की तरक्की में बाधक तत्त्व को पकड़ने की कोशिश करते हैं। अशिक्षा, गरीबी, जहालत, ग्रामीण जनजीवन की सबसे बड़ी बीमारी है। इसलिए बापू बुनियादी शिक्षा, स्त्री-शिक्षा एवं प्रौढ़ शिक्षा पर जोर देते हैं। उनके लिए शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण, यथार्थ एवं व्यावहारिक ज्ञान से है। उनकी शिक्षा का लक्ष्य खुद को उत्पादन करने योग्य बनाना है, आत्मनिर्भर बनाना है। वे लिखते हैं- ''शिक्षा से मेरा प्रयोजन यह है कि बालकों और प्रौढ़ों के शरीर, मन व आत्मा का सर्वांगीण विकास किया जाए। मैं चाहता हूँ कि बच्चे का सर्वांगीण विकास किया जाए।... मैं चाहता हूँ कि बच्चे का शिक्षण उसे कोई उपयोगी हस्तकला सिखाने से शुरू हो''। गांधी जी का शिक्षा के विषय में दिया गया यह वक्तव्य नई शिक्षा नीति 2020 में शामिल किया गया है, जिसका उद्देश्य सतत एवं समावेशी शिक्षा है।

स्वदेशी भाषा की उन्नति तथा हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए बापू अनवरत प्रयासरत रहे। राष्ट्रभाषा की महत्ता को समझते हुए उन्होंने कहा था- ''राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है''। हिंदी की तरक्की, उन्नति और सर्वसुलभता से राष्ट्र की उन्नति आंकने वाले बापू हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कई संस्थाओं की स्थापना करते हैं, जैसे- दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा मद्रास, राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, वर्धा आदि। जाहिर सी बात है कि अपनी भाषा की उन्नति के बिना, राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं है। आजादी के पचहत्तर साल बाद भी भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है, यह आश्चर्य का प्रश्न है। हिंदी के साथ-साथ वे देश में प्रचलित लोकभाषाओं को विलुप्त होने से बचाना चाहते थे, लोकभाषाओं की समृद्धि लोकजीवन की समृद्धि है। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उनका अनवरत प्रयास भूला नहीं जा सकता। वे लिखते हैं- ''सारे हिंदुस्तान के लिए जो भाषा चाहिए, वह तो हिंदी ही होनी चाहिए। उसे उर्दू या नागरी लिपि में लिखने की छूट होनी चाहिए।... हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है''।

अंततः यह कहा जा सकता है कि गांधी जी ने ग्राम स्वराज का जो स्वप्न अनेकों साल पहले देखा था, वह देश की भलाई एवं तरक्की के लिए बहुत जरूरी था। जब तक देश का गाँव विकास नहीं करेगा, समाज का वास्तविक विकास संभव नहीं है। गांधीजी इस सूक्ष्मता को समझते थे, इसलिए वह पहले गाँव का विकास करना चाहते थे। शिक्षा, रोजगार, सर्वोदय योजना, आदर्श ग्राम योजना, आत्म निर्भरता, स्त्री पुरुष समानता, त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था, युवाओं को जागृत करना, शिक्षा के साथ-साथ हुनर पर जोर देना, आत्मनिर्भरता आदि मत उनके ग्राम स्वराज की अवधारणा है। जिसे बाद में देश-हित में विकासवादी कार्यक्रम के रूप में शामिल भी किया गया। वर्तमान में उज्ज्वला योजना, ग्राम शक्ति अभियान, किसान कल्याण कार्यशाला, स्वच्छ-भारत अभियान, कौशल विकास मेला, आत्मनिर्भर भारत, पंचायत चुनाव आदि गांधीजी के ग्राम स्वराज संबंधित मतों का विकसित एवं परिनिष्ठित रूप है। गांधीजी नकारात्मक स्वतंत्रता के विपरीत व्यक्ति की स्वतंत्रता, नैतिक, इंद्रिय निग्रह, मन की पवित्रता, आत्मसंयम तथा सामाजिक अनिवार्यता पर बल देते हैं। मशीनीकरण एवं शहरीकरण के दौर में जब देश से गाँव विलुप्त हो रहे हैं, उस दौर में गांधीजी का 'ग्राम स्वराज' संबंधित मत प्रासंगिक हो जाता है। हमें जरूरत है इसे प्रसारित करने की तथा खुद में समाहित करने की। किसी ने सही लिखा है-

''सुना है उसने खरीद लिया है करोड़ों का घर शहर में,
मगर आंगन दिखाने आज भी वह बच्चों को गाँव लाता है''।

सहायक ग्रंथ

1. गांधी, महात्मा; हिन्द स्वराज, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद, 1982
2. सेठी, जयदेव; गांधीजी की प्रासंगिकता, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, 1979
3. धवन, गोपीनाथ; सर्वोदय तत्व दर्शन, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद, 1963
4. सुमन, रामनाथ; गांधीवाद की रूपरेखा, साधना सदन चेतगंज, वाराणसी, 1939
5. भंडारी, चंद्रराज; गांधी-दर्शन, गांधी हिन्दी मंदिर इंदौर, 1959
6. सिंह, रामजी; गांधीजी दर्शन मीमांसा, बिहारी हिंदी ग्रंथालय पटना, 1986
7. भावे, बिनोवा; शिक्षण- विचार, सर्वसेवा संघ प्रकाशन राजघाट वाराणसी, सातवाँ संस्करण, 2016

****